Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

अमृतलाल नागर का नारी विषयक दृष्टिकोण

शैलेश निषाद* प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा**

* शोधार्थी, हिंदी अध्ययन शाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत
** विभागाध्यक्ष, हिंदी अध्ययन शाला, विक्रम विश्वविद्यलय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – प्राचीन काल से हमारे समाज में नारियों की स्थिति अत्यंत दयनीय रही है। नारियों का शोषण अनादिकाल से चला आ रहा है। साथ ही साथ पुरुष की प्रधानता सर्वत्र व्याप्त थी। पुरुष और स्त्री समाज निर्माण के दो पूरक तत्व थे। प्राचीन काल में ऋषियों के काल से लेकर स्त्री जाति, पुरुष को देवतुल्य मानती है, और एक शब्द में कहा जाए तो स्त्री द पुरुष का गुलाम बनकर अपना जीवन व्यतीत करती थी। पुरुष का सर उसकी कमाई पर आश्रित होकर जीवन निर्वाण करने वाली स्त्री के सामने उंचा रहता है। इसके अलावा स्त्री की अपेक्षा पुरूष का शारीरिक बल भी ज्यादा होने के कारण उसका मान सदैव बढ़ता रहा है। इन कारणों से नारी के प्रति पुरुष का अत्याचार प्राचीन काल से देखने को मिलता है।

'प्रकृति प्रदत्त शारीरिक भिन्नता, दुर्बलता भी कह सकते हैं, के अलावा उसमें जो कुछ भी भिन्न, दुर्बल या निचले स्तर का रहा है, वह विभिन्न कालों में, विभिन्न परिस्थितियों या परिवेश की उपज है।'[1]

परिवार की आर्थिक गतिविधियों में सहभागी होने के बावजूद भी नारियों का स्थान परिवार तथा समाज में पुरुष से निम्न रहा। धन, धरती और सत्ताा से वंचित रहने के कारण इस स्त्रियों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति अत्यंत दयनीय रही है। इस कारण स्त्री वर्ग का यौन शोषण इतर वर्ग के लोगों द्वारा आसान रहा। एक ने इसे नियति मानकर स्वीकार किया, तो दूसरे ने भाग्य मानकर स्वीकार किया है। हिंदी के आम साहित्यकार की सोच परिवर्तनवादी न होकर पुरातनपंथी रही है। हिंदी के अधिकांश लेखक और साहित्यकार तथाकथित उच्च वर्ग के रहे, तथा वह अपने वर्ग और वर्ण के हितों से परे नहीं जा सके। भारतीय मानसिकता नारियों को सीता और सावित्री के रूप में देखने की चाह रखने वाली रही है। यह मानसिकता धीरे-धीरे यथार्थ से टकराकर टूटी, किंतु शोषण का दंश झेलती हुई नारियां इस दृष्टि अभागी रही हैं।

अमृतलाल नागर ने अपने साहित्य में नारियों के विषय में और उनकी विवशता व उनके जीवन में होने वाली समस्याओं के विषय को अपने साहित्य में प्रमुखता से स्थान दिया है। स्त्रियों की अनेक प्रकार की समस्याओं को नागर जी ने अपने उपन्यास के माध्यम से पाठक वर्ग के सम्मुख रखा है। जिसमें 'महाकाल' उपन्यास में मुट्ठी भर दाने के लिए बेची जाने वाली स्त्री की विवशता समाज की आंखों को खोलने के लिए पर्याप्त भूमिका निभाती है। इस तरीके से अमृत लाल नागर जी ने 'बूंद और समुद्र' उपन्यास में जिसमें ताई लड़की के प्रजनन के कारण त्याग दी जाती है। उसी समय स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों के प्रति शस्त्र उठाने वाली वन कन्या भी नागर जी के उपन्यास में स्त्रियों की स्थिति को चित्रित करती है। अत्याचार से पीड़ित वह वन कन्या अपनी भाभी के विषय में कहती है-

'भाभी का अपराद यही है कि वह औरत है और एक इकोनॉमिकलीफ्री नहीं है।'[2]

महिपाल की राय में ' भारत का घर स्त्रियों के लिए कसाई खाना है।'[3] स्त्री और पुरुष इन दोनों की सामाजिक मर्यादा में आज भी बड़ा अंतर देखने को मिलता है। नारी होना आज की सामाजिक स्थिति में अभिशाप है। वनकन्या के माध्यम से इसका कारण अमृतलाल नागर जी स्पष्ट करते हैं- 'स्त्री आर्थिक तौर पर पुरुष की आश्रिता है।'[4]

अमृतलाल नागर जी अपने साहित्य में नारियों की स्थिति को दूर करने के लिए सामाजिक क्रांति का आह्वान करते हैं। वनकन्या के माध्यम से वे नारी जाति को उद्बोधित करते हैं।

'दूर कर नारी यह मोह। घुंघट के पट खोल। पुरुष के अत्याचारों के खिलाफ संगठित होकर अपनी आवाज उठा। जिस दिन स्त्री जाति अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों का अंत करने के लिए निश्चय पूर्वक खड़ी हो जाएगी उसी दिन दुनिया से हर तरह के अत्याचार मिट जाएंगे।'[5]

अमृतलाल नागर जी ने नारी विषयक दृष्टिकोण को देखते हुए, और स्त्रियों की विवशता को अपने उपन्यास 'नाच्यो बहुत गोपाल' में यथार्थ के रूप में चित्रित किया है। इस उपन्यास की पात्र 'निर्गुनिया य पुरुष जाति से पीड़ित होकर ब्राह्मणी से मेंहतरनी बन जाती है। नारी जीवन की कटुता को स्पष्ट करती हुई, वह कहती है-

'दुनिया में दूर-दूर देशों तक, औरत से बढ़कर और कोई भी ज्यादा गुलाम नहीं है।'[6]

अमृतलाल नागर जी ने नारी के विषय में अथवा उसके संदर्भ में बेमेल विवाह, अंतर्जातीय विवाह, बाल विवाह, की समस्याओं को अपने उपन्यासों के माध्यम से उठाया है।

सच्चे प्रेम से वंचित 'बड़ी' जैसी स्त्रियों को प्रकाश में लाकर अमृतलाल नागर जी ने स्वार्थी पुरुषों को छुटकी दी है। अपने जीवन में थोड़े प्रेम की खोज में प्रेम का नाटक रचने वाला 'विरहेश' की प्रेमिका बन जाती है। स्थितिवश वह घुटन अनुभव करने वाली स्त्रियां और उस कारण निम्न स्तर की ओर गिरने वाली व दुखद स्थिति में पहुंचने वाली उनकी हालत हृदय विदारक होती है। अंत में 'विरहेश' से प्रताड़ित और पीड़ित बनकर दुख झेलती हुई 'बड़ी' को देखकर भारत के ऐसे पुरुष वर्ग की ओर समाज निंदापरक दृष्टि डालता है। 'पतिव्रत्यनिष्ठा का उद्घोषणा करने वाली भारतीय संस्कृति

को कलंक लगाने वाला प्रधान कार्य भारत के पुरुष ही हैं, कोई संदेह नहीं, इस नग्न सत्य के प्रति आंखें खोलने का समय बीत चुका है।'[7]

अमृतलाल नागर जी ने इस प्रकार एक व्यापक सामाजिक आधार फलक पर संपूर्ण भारतीय जीवन की समस्या को नारी के विषय में आबद्ध कर दिया है।

अमृतलाल नागर जी ने नारी विषयक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने अपने उपन्यास 'अमृत और विष' में अंतर्जातीय विवाह को समाज के सम्मुख रखा है। समाज की प्रगति के लिए अंतर्जातीय विवाह का नागर जी ने समर्थन किया है।

'अंतर्जातीय विवाह से मनुष्य संकीर्णता से उठकर व्यापक दायरे में आ जाएगा। लेकिन यह भी देखा जाता है कि विवाह के बाद पति-पत्नी के बीच चुभन भरी स्थितियां होती हैं।'[8]

इस उपन्यास में 'भवानी शंकर' और 'उषा' का विवाह इसका मूल उदाहरण है। उनका अंतर्जातीय विवाह असफल होता है। अमृतलाल नागर ने 'रमेश' और 'रानीबाला' के विवाह से अंतर्जातीय विधवा विवाह को सफल दिखाया है। 'अमृत और विष' में 'अरविंद शंकर' के अपने अनुभव को बताते नागर की स्पष्ट करते हैं कि ऐसे विवाह के अधिकांश लोग सुखी और संतुष्ट हैं। अरविंद शंकर का जीवन अनुभव है कि 'हिंदू पति, मुसलमान या इसाई पत्नी, ईसाई या मुसलमान पति और हिंदू पत्नी- ऐसे जोड़े अब दिनों दिन क्रमश: बढ़ रहे हैं और निजी अनुभव से जानता हूं कि उनमें अधिकांश सुखी, संतुष्ट और आबरूदार, बाल बच्चेदार हैं।'[9] अंत में नागर जी अपनी उंची अभिलाष प्रकट करते हैं कि जाति, वर्ण और धर्म की चिंता विवाह में ना हो जाए। डॉक्टर आत्माराम के माध्यम से नागर जी अपना अंतिम निर्णय देते हैं- 'अब इस देश में शादियां इस तरीके से होनी चाहिए कि उन्हें देखकर कोई यह न कह सके कि यह हिंदू की शादी है या मुसलमान की या क्रिश्चियन की हो रही है। समाज के सामने नव दंपति एक- दूसरे को स्वीकार करें और समाज में स्थान पाएं। इससे हमारे जातीय और सांप्रदायिक भेद भावनाएं मिटेगीं।'[10]

अमृतलाल नागर जी ने अपने साहित्य में स्त्री विषयक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए समाज पर दहेज की समस्या को लेकर करारा व्यंग्य किया है। नारी के संदर्भ में दहेज एक अभिशाप है। यह समाज के लिए एक सिर दर्द है। इस दहेज के भार से लड़की के माता-पिता इतने टूट जाते हैं कि दोबारा उसे मान- सम्मान से उठाना मुश्किल हो जाता है। दहेज हमारे समाज में सबसे बड़ी समस्या के रूप में उभर कर हमारे सामने आया है। अमृतलाल नागर के उपन्यास 'बूंद और समुद्र' में महिपाल कहता है कि 'मूर्ख से मूर्ख वर के लिए भी कम से कम तीन-चार हजार का दहेज देना होगा और इतना ही रुपया ऊपर से लग जाएगा, यह सात द आठ हजार की रकम में चुकाऊंगा कहां से?।'[11]

अमृतलाल नागर ने इसी तरह अपने उपन्यास 'अग्निगर्भा में भी 'सीता 'को दहेज की कमी के कारण पीड़ित होते दिखाया है।

अमृतलाल नागर ने अपने साहित्य में नारियों से संबंधित सभी प्रकार की समस्याओं से अवगत कराया है। नारियों की दयनीय स्थिति में होने का सबसे बड़ा कारण हमारा समाज व हमारी सोच है। जिसे हमें बदलने की आवश्यकता है। स्त्री चाहे वह निम्न वर्ग की हो या उच्च वर्ग की हो, सभी को एक निगाह से देखने के पक्षपाती नागर जी रहे हैं। स्त्रियों के उत्थान के लिए उन्होंने अंतर्जातीय विवाह, बाल विवाह, विधवा विवाह और दहेज की समस्या को प्रमुखता के साथ समाज के सम्मुख रखा है। समाज में नारी क्रियाशील रहे तो वह सामाज में सभी प्रकार के संस्कारों को जन्म दे सकती है। अमृतलाल नागर ने अपने साहित्य में सदैव नारियों के उत्थान व उनके प्रति अपना दृष्टिकोण सदैव सकारात्मक रूप में रखा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. भारतीय नारी- दशा - दिशा - आशारानीव्होरा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली , प्रथम संस्करण - 1983 , पृष्ठ - 3
2. बूंद और समुद्र - अमृतलाल नागर , पृष्ठ - 56
3. वही - पृष्ठ - 111
4. वही - पृष्ठ - 437
5. वही - पृष्ठ - 93
6. नाच्यो बहुत गोपाल - अमृतलाल नागर- पृष्ठ - 229
7. बूंद और समुद्र - पृष्ठ - 180
8. अमृत और विष - पृष्ठ - 110
9. वही - पृष्ठ - 674
10. वही - पृष्ठ - 470
11. बूंद और समुद्र - पृष्ठ - 107

****